वेबर का औद्योगिक स्थानीयकरण का सिद्धान्त

वेबर ने 1909 में जर्मन भाषा में औद्योगिक स्थानीयकरण का प्रथम क्रमबद्ध तथा विवेकपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, जिसका अंग्रेजी अनुवाद 1929 में प्रस्तुत किया गया।

वेबर के अनुसार यदि उपरोक्त सुविधाएँ उपलब्ध हो तो निर्माण उद्योगों के संयन्त्रों या कारखानों की स्थिति तीन शक्तियों के द्वारा निर्धारित होगी - (i) सापेक्ष परिवहन लागत, (ii) मजदूरी लागत तथा (iii) समूहीकरण

परिवहन लागतों का प्रभाव :- परिवहन लागतें विभिन्न प्रकार से क्रियाशील होती हैं। ये दशाएँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं।

प्रथम दशा - एक बाजार और एक कच्चा माल - यदि किसी उद्योग में किसी एक ही कच्चे माल की आवश्यकता है और उसकी मांग भी एक निश्चित स्थान पर है तो उद्योग के स्थानीयकरण की तीन सम्भावित दशाएँ होंगी -

(1) यदि कच्चा माल सर्वत्र प्राप्त है तो प्रायः उद्योग की स्थापना बाजार के निकट होगी।

(2) यदि कच्चा माल एक निश्चित स्थान पर ही उपलब्ध है, किन्तु वह शुद्ध पदार्थ है, तो उद्योग की स्थिति बाजार या कच्चे माल के स्रोत दोनों स्थानों पर हो सकती है, क्योंकि पदार्थ सूचकांक में बहुत भिन्नता नहीं होती है।

(3) यदि कच्चा माल निश्चित स्थान पर है और मिश्रित है तो स्वाभाविक रूप से उद्योग की स्थिति कच्चे माल के निकट होगी।

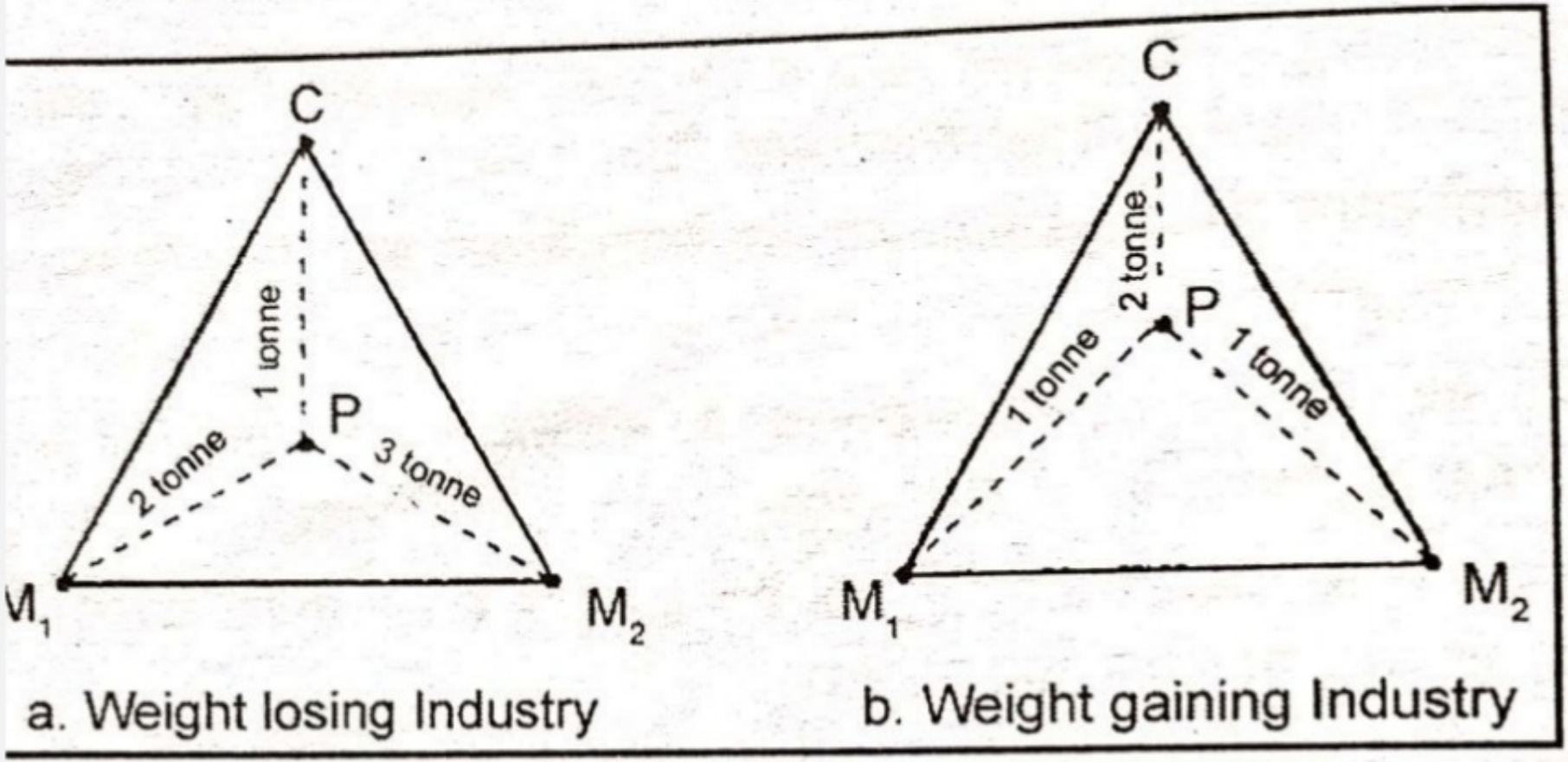

चित्र 18.1 : वेबर के अनुसार कारखाने (उद्योग) की स्थिति

द्वितीय दशा - एक बाजार और दो कच्चे माल - यदि किसी उद्योग में दो कच्चे माल की आवश्यकता है तो तथा उसकी माँग एक ही स्थान पर है तो उद्योग की स्थिति की सम्भावित दशाएँ निम्नवत होंगी -

(1) यदि दोनों कच्चे माल सर्वत्र उपलब्ध हैं तो उद्योग की स्थिति बाजार के निकट होगी।

(2) यदि एक कच्चा माल सर्वत्र सुलभ है तथा दूसरा कच्चा माल बाजार से दूर मिलता है और दोनों कच्चे माल शुद्ध हैं तो भी उद्योग बाजार के निकट स्थित होगा।

(3) यदि दोनों कच्चे माल बाजार से दूर निश्चित स्थान पर हैं; और शुद्ध हैं तो भी उद्योग बाजार के निकट स्थित होगा।

(4) यदि दोनों कच्चे माल निश्चित स्थान पर हैं और मिश्रित हैं, तो उद्योग की स्थिति समस्यापूर्ण होगी। सामान्यतः मिश्रित पदार्थ वाले उद्योग स्रोत के निकट ही स्थापित किये जाते हैं ताकि परिवहन लागत कम आये। इस समस्या के लिये वेबर ने अपना स्थानीयकरण का त्रिभुज सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। यदि दोनों कच्चे मालों की भार-हानि में अन्तर है तो उद्योग अधिक भार वाले कच्चे माल के निकट स्थापित होगा।

श्रम लागत का प्रभाव :- वेबर के अनुसार जब किसी स्थान पर उद्योग के स्थानीयकरण में परिवहन लागत की तुलना में श्रम लागत कम होती है तो उद्योगों की अवस्थापना में परिवहन लागत का महत्व समाप्त हो जाता है तथा श्रम लागत की स्थिति का निर्धारण करती है कुछ ऐसे केन्द्र हो सकते हैं जहाँ से श्रम दूसरे स्थान पर आसानी से नहीं भेजी जा सकती है।

अतः वहाँ के श्रम के महत्व के कारण उद्योग का स्थानीयकरण होगा। श्रम का स्थानीयकरण दो तत्वों से प्रभावित होता है :-

(i) श्रम लागत सूचकांक - यह श्रम लागत तथा निर्मित माल के भार का अनुपात है।

(ii) स्थानीयकरण भार - यह उत्पादन प्रक्रिया में परिवहन पर किया जाने वाला कुल भार है।

समूहीकरण का प्रभाव :- विनिर्माणी उद्योगों की अवस्थिति पर समूहीकरण का भी प्रभाव पड़ता है। इसके कारण प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी आ जाती है। ~~इसके~~

आलोचना :-

(1) वेबर की कई मान्यताएँ काल्पनिक हैं, जो वास्तविक से परे हैं।

(i) परिवहन व्यय में दूरी से समानुपाति वृद्धि नहीं होती

(ii) विशुद्ध स्पर्द्धा अपवाद स्वरूप होती है।

(iii) मानव सदैव विवेक से कार्य नहीं करता।

(iv) वेबर ने बाजार को बिन्दु के रूप में प्रदर्शित किया तथा एक कारखाने का एक ही बाजार बताया।

(2) परिवहन लागत (व्यय) अब किसी फर्म की स्थापना के लिए आधारभूत नहीं है। तकनीकी सुधारों से परिवहन व्यय घट गया है। अब हाई-टेक उत्पादों में श्रम अधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व बन गया है।

(3.) वेबर का ध्यान लागत कम करने पर अधिक केन्द्रित था। उन्होंने फर्म की आय पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।

(4) वेबर द्वारा प्रस्तुत समूहीकरण का प्रभाव वर्तमान औद्योगिक लागत की दशाओं से मेल नहीं खाता।

(5) वेबर ने राजनीतिक, सामाजिक तथा मानवीय कारकों की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जो आधुनिक औद्योगिक अवस्थिति को प्रभावित करते हैं।

(6) वर्तमान समय में एक उत्पाद तैयार करने वाले कारखाने या फर्म का स्थान, ~~बहुत~~ बहुउत्पादों वाले कारखानों ने ले लिया है। अब विनिर्माण प्रारम्भिक बीसवीं शताब्दी की अपेक्षा अधिक जटिल हो गया है। बहुत से संयन्त्र कच्चे माल की अपेक्षा अर्द्ध-निर्मित वस्तुओं का प्रयोग करने लगे हैं। अतः विनिर्माण में भार-हानि कम होती है।